जिस रात पलंग गिर गया

जेम्स थर्बर

जिस रात पलंग गिर गया

जेम्स थर्बर

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

नव जनवाचन आंदोलन

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति ने
'सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट' के सहयोग से किया है।
इस आंदोलन का मकसद आम जनता में
पठन-पाठन संस्कृति विकसित करना है।

जिस रात पलंग गिर गया	**Jis Rat Palang Gir Gaya**
जेम्स थर्बर	***James Thurber***
रूपांतरण	***Adaptation***
विद्यानिधि और अंशुमाला	Vidyanidhi and Anshumala
कॉपी संपादक	***Copy Editor***
राधेश्याम मंगोलपुरी	Radheshyam Mangolpuri
रेखांकन	***Illustration***
संदीप के. लुईस	Sandeep K. Louis
कवर व ग्राफिक्स	***Cover & Graphics***
अभय कुमार झा	Abhay Kumar Jha
प्रथम संस्करण	***First Edition***
नवंबर 2007	November 2007
सहयोग राशि	***Contributory Price***
10 रुपये	Rs.10.00
मुद्रण	***Printing***
सन शाइन ऑफसेट	Sun Shine Offset
नई दिल्ली - 110 018	New Delhi - 110 018

Publication and Distribution

Bharat Gyan Vigyan Samiti

Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block, Saket , New Delhi - 110017
Phone : 011 - 26569943, Fax : 91 - 011 - 26569773
Email : bgvs_delhi@yahoo.co.in, bgvsdelhi@gmail.com

BGVS NOV 2007 2K 1000 NJVA 0105/2007

जिस रात पलंग गिर गया

सनकपुर में बिताए गए मेरे शुरुआती दिनों की अगर कोई बड़ी यादगार है तो वह रात है जब मेरे पिताजी पर पलंग गिर गया था। इस प्रसंग को लिखने की बजाय सुनाना ज्यादा मजेदार है, बशर्ते मेरे दोस्तों की तरह सुन-सुनकर आप भी चट न जाएं। इसे सुनाने के लिए जरूरी है कि फर्नीचर को यहां-वहां फेंका जाए, दरवाजे खड़काए जाएं, कुत्ते की तरह भौंका जाए, ताकि इस असंभव-सी लगने वाली घटना के लिए माहौल बन सके और इसपर कुछ विश्वास हो सके। आप मानें या न मानें, यह घटना घटी जरूर।

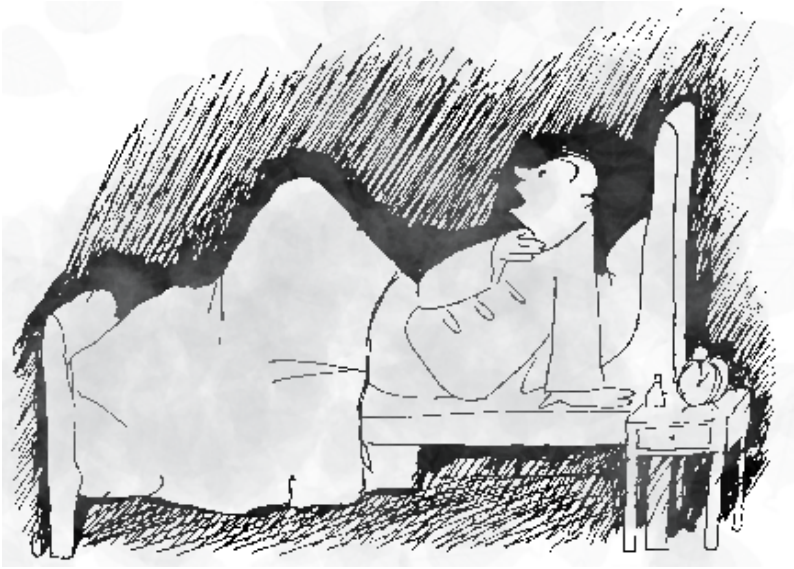

हुआ यह कि एक रात मेरे पिताजी ने अटारी में सोने का फैसला किया जिससे अकेले में सोच सकें। मेरी मां इसके सख्त खिलाफ थी। वह नहीं चाहती थी कि पिताजी वहां सोएं ! मां को लगता था कि वहां बिछा हुआ पुराना पलंग बड़ा खतरनाक है। वह इतना ढुलमुल है कि जरा-सा हिला नहीं कि टूट जाएगा और पीछे का बोर्ड उनके सिर पर आ गिरेगा और उनकी जान लेकर छोड़ेगा। पिताजी भला उसकी बात कहां मानने वाले थे ! ठीक सवा दस बजे उन्होंने अटारी का दरवाजा बंद किया और संकरी घुमावदार सीढ़ियां चढ़ गए। उनके बिस्तर में घुसते ही पलंग चरमराया जैसे खतरे की चेतावनी दे रहा हो। दरअसल, उस पलंग पर दादाजी सोया करते थे, पर पिछले कुछ दिन से वह गायब थे। अक्सर वह छह-सात दिन के लिए कहीं चले जाते थे। लौटकर आते तो बिलकुल आपे से बाहर होकर, जाने क्या-क्या बड़बड़ाते – मसलन, संसद में महामूर्ख लोगों का जमघट लगा है। सेना की हालत बिलकुल मदारी की बंदरिया की तरह हो गई है, जैसे चाहो नचा लो।

उन दिनों मेरा ममेरा भाई, तन्मय तड़ीमार, हमारे यहां रहने आया हुआ था। वह इस गलतफहमी का मारा था कि सोते-सोते अचानक उसकी सांस रुक जाएगी। उसका मानना था कि अगर उसे रात में हर घंटे न जगाया जाए तो वह दम घुटने से मर जाएगा। इसलिए उसे आदत थी कि सुबह होने तक वह हर घंटे के लिए अलार्म लगाता था। मैंने उसे यह आदत छोड़ने के लिए बहला लिया। मैं उसी कमरे में सोता था। मैंने उससे कहा कि मैं इतनी कच्ची नींद सोता हूं कि अगर मेरे कमरे में कोई सांस लेना बंद कर दे, तो मैं तुरन्त जाग जाऊंगा। उसने पहली रात ही मेरी परीक्षा ली- जिसका मुझे पहले से ही अंदेशा था - मेरी सांसों की नियमित रफ्तार सुनकर जब उसे लगा कि मैं सो गया हूं, तो उसने अपनी

सांस रोक ली। मैं तो वैसे ही सोने का नाटक कर रहा था, इसलिए मैंने उसे आवाज दी। इससे उसका डर थोड़ा कम तो हुआ, फिर भी उसने एहतियात के लिए एक बोतल कपूर का सत् अपने सिरहाने की मेज पर रख लिया। उसने कहा कि अगर कहीं गलती से मैं उसे नहीं जगा पाया और उसका दम घुटने लगा तो वह झट से कपूर सूंघ लेगा जिससे दोबारा होश में आ सके।

अपने परिवार में तन्मय कोई अकेला ही झक्की नहीं था। उसकी एक बूढ़ी चाची, सुलक्षणा तड़ीमार, थी (जो अपने मुंह में दो उंगलियां डालकर बिल्कुल आदमियों की तरह सीटी बजा सकती थी), जिसे वहम था कि उसकी मौत अक्कल बाजार में ही होगी क्योंकि उसकी पैदाइश अक्कल बाजार में हुई है और उसकी शादी भी अक्कल बाजार में ही हुई है।

निर्बला नकचढ़ा, उसकी बड़ी बुआ, भी कुछ कम न थीं। हर रात बिस्तर में घुसने से पहले वे यही सोचतीं कि कोई चोर उनके घर में घुसेगा और दरवाजे के नीचे से ट्यूब डालकर क्लोरोफार्म छिड़क देगा। इस विपदा से बचने के लिए- क्योंकि उन्हें घर का कीमती सामान खोने की बनिस्बत बेहोशी की दवा से ज्यादा डर लगता था- वे हर रोज अपना पैसा, जेवर और दूसरे कीमती सामान अपने कमरे के बाहर करीने से सजा देतीं और साथ में एक नोट लगा देतीं : "यही मेरा सब कुछ है। कृपया इसे ले लीजिए। बस अपना क्लोरोफार्म मत छिड़किए, क्योंकि यही मेरा सब कुछ है।"

छोटी बुआ, निर्भया नकचढ़ा, को भी चोरों से उतना ही डर लगता था, लेकिन उन्होंने इसका सामना करने के लिए एक तरकीब खोज ली थी। उन्हें पक्का विश्वास था कि पिछले चालीस सालों से हर रात उनके घर में चोर घुसते ही हैं। आज तक घर से कोई चीज गायब नहीं हुई, यह चोरों के न आने का सबूत नहीं था। वे हमेशा

दावा करती थीं कि चोर आते तो हैं पर वे अपने जूते फेंककर उन्हें भगाने में कामयाब हो जाती हैं। सोने से पहले वे अपने घर के सारे जूते इकट्ठा करके ऐसी जगह रख लेतीं जहां वे आसानी से हाथ में आ जाएं।

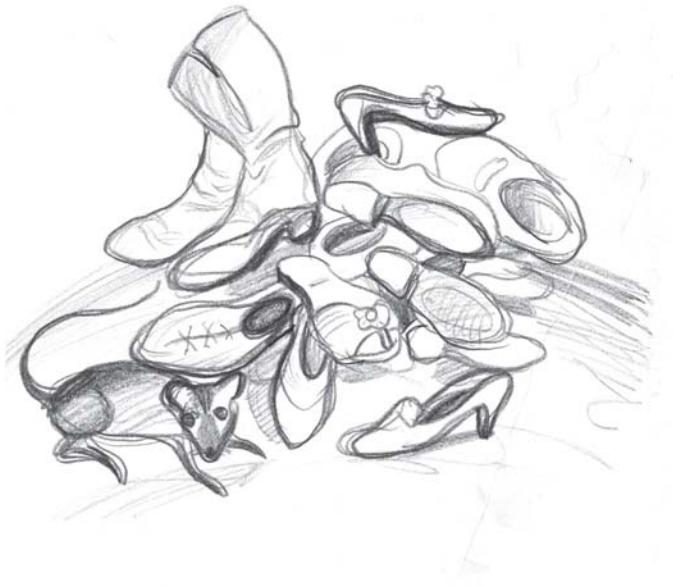

बत्ती बुझाने के 5 मिनट बाद ही वे बिस्तर पर उठकर बैठ जातीं और चिल्लातीं–''कौन है?'' उनके पति ने, जिन्होंने चालीस साल पहले ही इस पूरी स्थिति को अनदेखा करना सीख लिया था, या तो गहरी नींद में होते, या फिर गहरी नींद में सोने का बहाना कर रहे होते। चाहे जो भी हो, वे उनके चीखने–चिल्लाने पर टस से मस नहीं होते। आखिर वे खुद उठतीं, दबे पांव दरवाजे तक जातीं और उसे जरा–सा खोलकर जोड़ी का एक जूता हाल में एक तरफ फेंकतीं और दूसरा दूसरी तरफ दे मारतीं। किसी–किसी रात तो वे सारे जूते फेंक देतीं, तो कभी एकाध जोड़े से ही काम चल जाता।

लेकिन मैं उस अनोखे हादसे से भटक रहा हूं जो उस रात हुआ जब पिताजी के ऊपर पलंग गिर गया। आधी रात थी। हम सब सोए थे। क्या-क्या हुआ यह समझने के लिए पहले यह जानना जरूरी है कि कमरे कहां-कहां थे और उनमें सब किस तरह सोए थे। जीने के ऊपर (और पिताजी के अटारी वाले कमरे के ठीक नीचे) मेरी मां के साथ मेरा भाई गंभीर सोया था। गंभीर कभी-कभी नींद में 'कदम-कदम बढ़ाए जा' और 'सारे जहां से अच्छा' जैसे गाने गाता था। तन्मय और मैं इसके साथ वाले कमरे में सोए थे। मेरा भाई शूरवीर हॉल के दूसरी ओर, सामने वाले कमरे में सोया था। हमारा खूंखार कुत्ता जांबाज हॉल में सोया था।

मेरा पलंग सैनिकों के लिए बनी फोल्डिंग चारपाई जैसा था; जिसमें बीच का पल्ला सीधा, मगर कम चौड़ा होता है। किनारे पर दो और पल्ले नीचे लटके होते हैं। आराम से सोने के लिए इन पल्लों को खोलकर बीच वाले की सीध में लाना पड़ता है। इसमें सिर्फ एक ही दिक्कत है कि अगर सोते वक्त गलती से बिल्कुल किनारे पर सरक गए तो पूरा पलंग धड़ाम से उलटकर आपके ऊपर आ जाता है। और रात के दो बजे के आसपास बिल्कुल यही हुआ।

यह तो मेरी मां थी जिसने बाद में इस किस्से को यूं सुनाया– "उस रात जब तुम्हारे पिता के ऊपर पलंग गिर गया था।" मैंने तन्मय से झूठ बोला था। दरअसल, मैं घोड़े बेचकर सोता था। आसानी से मेरी नींद नहीं खुलती थी। मुझे पता ही नहीं चला कि कब मैं बिस्तर से गिरा और कब वह लोहे का पलंग मेरे ऊपर उलट गया, कुछ इस तरह कि जैसे मेरे ऊपर तम्बू तन गया हो। चोट लगना तो दूर, मैं आराम से गर्म बिस्तर में लिपटा सोया रहा। मुझे सिर्फ जरा–सा होश आया और फिर आंख लग गई। पर इस धमाके से साथ के कमरे में सोई मां की नींद फट से खुल गई। उसने फौरन तय कर लिया कि जिसका उसे हमेशा से डर था वही हुआ है, और लकड़ी का बड़ा पलंग ऊपर सोए पिताजी पर गिर गया है। तो वह जोर से चिल्लाई– ''गिर गया, गिर गया, सब लोग ऊपर चलो!'' मेरी पलंग गिरने की आवाज से तो नहीं; हां, मां की चीख–पुकार से उसके साथ सोया गंभीर जाग गया। उसको लगा कि मां को बेवजह दौरा पड़ गया है और वह उन्हें शांत करने की कोशिश करने लगा, "मां तुम्हें कुछ नहीं हुआ है, तुम बिल्कुल ठीक हो।" दस सेकेंड तक दोनों अपनी–अपनी धुन में चिल्लाते रहे, "सब लोग ऊपर चलो" और "तुम बिल्कुल ठीक हो।" इससे तन्मय जाग गया। इस समय तक मुझे हल्का–सा आभास तो था कि क्या हो रहा है, लेकिन अभी तक मैं यह नहीं समझ पाया था कि मैं चारपाई के

ऊपर नहीं, बल्कि नीचे हूं। डर और आशंका की इस चीख-चिल्लाहट में तन्मय फौरन इस नतीजे पर पहुंच गया कि उसका दम घुट गया है और हम सब उसको होश में लाने की कोशिश कर रहे हैं। हल्के-हल्के कराहते हुए उसने अपने सिरहाने पड़े कपूर के सत् वाले गिलास को पकड़ा और सूंघने की बजाय अपने ऊपर उलट लिया। पूरा कमरा कपूर की तीखी गंध से महकने लगा। "अहहउफ ···अह" तन्मय पानी से बाहर मछली की तरह तड़पने लगा। उस तीखी गंध की महक में वह अपना दम घोंटने में लगभग सफल ही हो गया था। वह अपने बिस्तर से कूदा और खुली खिड़की की तलाश करने लगा, पर एक बंद खिड़की ही उसके हाथ आई। हाथ के एक मुक्के से उसने खिड़की का शीशा तोड़ दिया और मुझे नीचे की गली में कांच के बिखरने की खनक सुनाई दी। इस मोड़ पर कहीं जाकर जब मैंने उठने की कोशिश की, मुझे यह अजीबोगरीब अहसास हुआ कि पलंग मेरे ऊपर है, नीचे नहीं। नींद की उस खुमारी में मुझे लगा कि यह सारा हंगामा मुझे उस खतरनाक स्थिति से बाहर निकालने के लिए हो रहा है। मैं चीखने लगा, "मुझे बाहर निकालो, मुझे बाहर निकालो!" शायद मुझे ऐसा कुछ लग रहा था कि जैसे मैं किसी खदान में दबा हुआ हूं। 'ग ग ग ग' उधर तन्मय महोदय कपूर के धुएं में ही छटपटा रहे थे। वैसी ही चीखती हुई

मेरी मां, और उसके ठीक पीछे वैसे ही चीखता हुआ गंभीर, दोनों इस वक्त अटारी के दरवाजे को खोलने में जुटे हुए थे, जिससे ऊपर जाकर पिताजी के शरीर को मलबे से निकाला जा सके। पर दरवाजा जाम हो गया था और खुलने का नाम नहीं ले रहा था। दरवाजे को जोर-जोर से धकेलने से हल्ला और शोरगुल और बढ़ रहा था। शूरवीर और उसका कुत्ता जांबाज दोनों अब उठ गए थे। एक चिल्ला रहा था और दूसरा भौंक रहा था।

सबसे दूर और कुंभकरणी निद्रा में सोए पिताजी भी अब दरवाजे के पीटने की आवाज से जाग गए थे। उन्होंने सोच लिया कि घर में आग लग गई है। हल्की, उनींदी आवाज में वह धीरे से बोले- "मैं आ रहा हूं, भई आ रहा हूं।" पूरे होश में आने में तो उन्हें कई मिनट लगे। मेरी मां पहले ही यह मान बैठी थी कि वे पलंग के नीचे दबे हुए हैं। उनके "आ रहा हूं" सुनकर उन्हें लगा कि दुखी कातर स्वर में मरते वक्त वे ईश्वर को पुकार रहे हैं और

वह चीखीं – "हाय, उनका अंतिम समय आ गया है!"

जवाब तन्मय ने दिया, "मैं बिल्कुल ठीक हूं!" वह चीख-चीखकर सांत्वना देने लगा- "मैं बिल्कुल ठीक हूं।" उसे अब भी यही लग रहा था कि मां की चिंता का कारण, उसके खुद के करीब खड़ी मौत ही है। आखिरकार मैंने बल्ब का स्विच ढूंढकर कुंडी खोल ही ली। तन्मय और मैं दौड़कर अटारी के दरवाजे पर पहुंचे। हमारे कुत्ते को तो पहले ही तन्मय खास पसंद नहीं था, यह सोचकर कि हंगामे की जड़ वही है, वह उसपर झपट पड़ा। शूरवीर ने कुत्ते को खींचकर दबोच लिया। जीने के ऊपर पिताजी के बिस्तर में से निकलने की आवाज आई। शूरवीर ने दरवाजे को झटके से खोल लिया और पिताजी नींद से भरे और चिड़चिड़े, पर सही-सलामत सीढ़ियों से नीचे उतर आए। मां उन्हें देखते हुए दहाड़ मारकर रोने लगी। जांबाज गुर्राने लगा। "अरी भागवान, ये सब क्या हो रहा है?"

काफी देर के बाद कहीं जाकर यह गोरखधंधा सबकी समझ में आया। फर्श पर नंगे पैर घूमने से पिताजी को जुकाम तो जरूर हुआ, पर बाकी सब कुशल-मंगल था। "मुझे खुशी है," मां बोली, जिसे हर चीज में कुछ अच्छा ही ढूंढने की आदत है, "कि तुम्हारे दादाजी यहां नहीं थे।" ❐

भारत
ज्ञान
विज्ञान
समिति

नव जनवाचन आंदोलन

इस असंभव–सी लगने वाली घटना का माहौल बनाने के लिए जरूरी है कि फर्नीचर को यहां–वहां फेंका जाए, दरवाजे खड़काए जाएं, कुत्ते की तरह भौंका जाए ··· पलंग क्या गिरा कि घर में चीख–चिल्लाहट शुरू हो गई, घर के लोग तरह–तरह की आशंकाओं से घिर गए और अफरा–तफरी मच गई। मां को लगा कि पिताजी परलोक सिधार गए। तन्मय को लगा कि उसका दम घुट रहा है ··· पर असल में हुआ क्या था ? पढ़िए इस कहानी में।